उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में विविध संदर्भ

*डॉ. संगीता सक्सेना

उषा प्रियंवदा ने आज के नारी जीवन की विसंगतियों को सोचा–समझा है और अपनी तीनों औपन्यासिक मासिक कृतियों में उन्हें आत्मसात किया है । परिवर्तित संदर्भों, नई परिस्थितियों तथा उलझनपूर्ण मनः स्थितियों में नारी के ''फिट'' या ''अनफिट'' होने की प्रवृत्ति तथा आधुनिकता एवं भारतीय संस्कारों के मध्य द्वंद्व को उन्होंने किन विविध संदर्भों में चित्रित किया है । यही इस शोध–पत्र का प्रतिपाद्य है।

विवेच्य उपन्यासों का कथ्य–परिचय

''रूकोगी नहीं राधिका'' (1904) की नायिका राधिका ऐसी दुविधा से घिरी नारी है जो पिता के जीवन के किसी भी क्षण को किसी दूसरे के साथ बांटते नहीं देखना चाहती है। उसके पिता अठारह वर्ष तक एकाकी जीवन व्यतीत करने के पश्चात् विवाह करते हैं , राधिका इसे सह नहीं पाती और डैन नामक युवक के साथ अमेरिका चली जाती है। वहां भी वह डैन में अपने पिता को खोजना चाहती है उसका संबंध टूट जाता है। पढाई पूरी करके वह भारत वापस लौटती है। वह पुराने संबंधों को पाने के लिए व्याकुल हो उठती है। प्रयत्न करने पर वह पुराने संबंधों को जिला नहीं पाती और दिल्ली आ जाती है । इस उपन्यास में एक तरफ पिता व पुत्री में स्नेह का तनाव है, वहीं दूसरी तरफ राधिका के मनीष व अक्षय के बीच डोलने की स्थिति है । अंतम में राधिका पिता के साथ रहना अस्वीकार कर देती है और मनीष के साथ देश भ्रमण करने निकल पडती है।

''पचपन खम्भे लाल दीवारें''1979) उपन्यास की नायिका सुषमा एक सुंदर, शिक्षित नारी है। वह गर्ल्स कालेज में महत्वपूर्ण पद को संभाले हुए है। किंतु अकेलेपन की अनुभूति उसे व्यथित करती है। उसके चारों तरफ दीवारें हैं–दायित्व की, कुंठा की, अपने पद की गरिमा की और परिवार की। पारिवारिक दायित्व के कारण वह विवाद नहीं करती। उसके सूनेपन का साथी बनकर नील उसके जीवन में प्रवेश करता है जिससे उसका जीवन नई चेतना से संचरित होने लगता है। वह नील से विवाह इसलिए नहीं करना चाहती कि वह उससे उम्र में बडी है और नील उसे किसी भी दिन छोड सकता है, यह आशंका उसके मन में है। सुषमा कर्तव्य–भावना के वशीभूत होकर नील को लौटा देती है और पचपन खम्भों से घिरी अपनी चारदीवारी में लौट आती है। ''अंतर्वंशी''(2000) उपन्यास में बनारस की वनश्री मिशिर उर्फ वाना की जीवन यात्रा का अंकन है । राहुल, शिवेश और वाना–तीन मुख्य पात्र हैं। वनश्री को शिवेश विवाह हेतु देखने आता है पर वह शिवेश के स्थान पर राहुल को देखती है और पति रूप में वरण भी कर लेती है। राहुल शिवेश का मित्र है। शिवेश से वनश्री का विवाह हो जाता है और वह विदेश आ जाती है। राहुल उसके जीवन में बार–बार आता है । शिवेश वाना को केवल भोगता है, फलस्वरूप वाना आत्मिक स्तर पर उससे दूर होती जाती है । आर्थिक अभाव और प्रेम में असंतोष वाना को द्वंद्वग्रस्त करते हैं और वह राहुल के प्रति खिंचती चली जाती है । शिवेश पैसा कमाने के लिए ड्रग व्यापार में शामिल हो जाता है । पुलिस के डर से फरार हो जाता है । वाना राहुल के प्रति समर्पण करती है और गर्भवती हो जाती है । शिवेश पुलिस से बचकर एक बार फिर लौटता है और यह जानकर कि वाना उसे छोड़ने का निर्णय ले चुकी है तथा राहुल से गर्भवती है, वह ''शाक्ड'' हो जाता है, आत्महत्या कर लेता है। वाना द्वंद्व से उबरती है और राहुल के पास चली जाती है।

आलोच्य उपन्यासों में स्त्री : विविध संदर्भ

वैयक्तिक संदर्भ

पचपन खम्भे लाल दीवारें

1. घुटन– सुषमा अपने परिवार के प्रति सारे दायित्वों को एक यंत्र की तरह पूरा कर रही है, लेकिन अपने भविष्य के विषय में सोचकर वह घुटती रहती है–''सुषमा को लगा कि वह एक दलदल में फंसकर रह गई है। वह छटपटाती है, उबरना चाहती है, पर दिन–प्रतिदिन डूबती ही जा रही है।''1

2. अकेलापन– सुषमा परिवार के प्रति समर्पित है, लेकिन वह यह भी अपेक्षा करती है कि उसकी भी उसके भविष्य की चिंता करें और जब वह यह नहीं देखती तो उसे बेहद अकेलापन महसूस होता है– ''सुषमा प्रायः उपेक्षित–सा अनुभव करने लगती थी। वह चाहती थी कि मां उसके जीवन में आ गए बिखराव को कुछ तो समझने का प्रयत्न करे।''2

रूकोगी नहीं राधिका

1. अस्तित्व–बोध– ''रूकोगी नहीं'' की राधिका अपने पिता के पुनर्विवाह के उपरान्त बेहद विचलित हो जाती है। पिता का यह कृत्य उसके वैयक्तिक स्वातंत्र्य पर आघात–स्वरूप लगता है। इसकी प्रतिक्रिया से वह भी पिता के साथ रहना अस्वीकार करती है ''जो आप चाहते हैं, वही हमेशा क्यों हो?क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है? मैं आपकी बेटी हूं, यह ठीक है, पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूं और मैं जो चाहूंगी, वही करूंगी।''3

* सहायक प्राध्यापक हिन्दी, शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहगढ़

2. अकेलापन—विदेश से लौटने पर जब राधिका से मिलने कोई नहीं पहुंचता तो उसे अकेलापन महसूस होता है। वह सोचती है कि बड़े दा या पापा, किसी को भी उसकी जरूरत नहीं । 4

अंतर्वंशी

1. अब— वाना सोचती है ''इन सबके बावजूद एक सूनापन, एक उदासी उसके शरीर में भिदकर रह गई है, एक रोग की तरह, हर दिन जैसे संखिया की छोटी—सी खुराक है।''5

2. अस्तित्व—बोध— वनश्री उर्फ वाना अपने पति के साथ विदेश जाती है, लेकिन पत्नि व मां की भूमिकाएं निभाते—निभाते कभी—कभी अपने अस्तित्व के विषय में सोचती है, ''पत्नि, मां —जो मेरी शिक्षा रही, पर अंदर की स्त्री जो हमेशा इस शांत मुखाकृति के भीतर, रेस्टलेस खोज में व्यस्त, इधर—उधर भटतकती रही, यहां भी जो कुछ मिला, उसी को कंगाल की तरह संजोती रही, अब यह बेईमानी नहीं चल पायेगी अजी। मैं कब तक अपने को ठगती रहूंगी — कब तक अपने ''स्व'' को अपूर्ण रखूंगी ।''6

सामाजिक संदर्भ

पचपन खम्भे लाल दीवारें

1. सामाजिक वर्जनाएं—सुषमा नील से उम्र में बड़ी है अतः उसका सोचना है कि यह विवाह उचित नहीं है। इस वर्जना की नियति सुषमा को अकेला कर देती है। स्वाति के पक्ष में वह समाज के लिए जो भी कहती है—स्वयं अपने जीवन में वह इसका साहस नहीं कर पाती— ''आपके सामाजिक मापदण्ड यह कहते हैं कि आप सबके सामने व्यक्तिगत् जीवन की धज्जियां उड़ा दीजिए, हरेक का जीवन ऐसा अनुलंघनीय दुर्ग है जिसका अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं ।''7

अंतर्वंशी

1. सामाजिक वर्जनाएं— स्वयं को पति के द्वारा ट्रेंक्वेलाइजर की तरह इस्तेमाल होते देख वाना बेहद त्रस्त है, पर सामाजिक वर्जनाएं उसे चुप रहने को विवश करती हैं। ''शिवेश के प्रति विमुख होने का यह असली कारण नहीं है। वाना जानती है कि इसके मूल में क्या है, पर वह होठों तक कैसे लाये ? एक बार अगर उसने अपने से कह दिया तो फिर बंद रास्ते के अन्त में दीवार पर सर पटकने के अलावा और कोई चारा नहीं बचेगा ।''8

आर्थिक संदर्भ

पचपन खम्भे लाल दीवारें

1. स्त्री की परिवार में बदलती भूमिका— सुषमा परिवार की बडी बेटी के रूप में 'बेटे' का दायित्व निर्वाह करती है— ''अगर मैं सबसे बडा लडका होती तो क्या न करती ? इसी तरह अब भी करती हूं ।''9

2. बदलते आर्थिक समीकरण— सुषमा की मां का दोहरा बर्ताव यह संकेतित करता है कि आर्थिक दबावों के मद्देनजर परिवार में आर्थिक समीकरण भी बदल रहे हैं। सुषमा तो बेटा बन गई है, लेकिन वह अधिकार उसको नहीं मिल पाया, क्योंकि अपने परिवार की अर्थ—व्यवस्था की वह एकमात्र धुरी है जिसके खिसकने से परिवार बिखर जायेगा। नये बदलते आर्थिक संबंधों की पुष्टि नील भी करता है— ''तुम्हारा परिवार तुम्हारा अनड्यू एडवांटेज लेता है।''10

अंतर्वंशी

1. बदलते आर्थिक समीकरण—मध्यमवर्गीय स्त्री वाना को भौतिक समृद्धि की आकांक्षा है, लेकिन उसके पति बेहद संतोषी हैं। वाना सोचती है ''वह चाहती है कि शिवेश लाइन पर लगे । राहुल की तरह पक्की नौकरी पर लगे, फिर खरीदें गाडी और घर, वाना जो मन आए वही शापिंग करे............. क्या यह सब इच्छाएं ऐसी अनहोनी, असंभव हैं। उसे शिवेश पर झुझलाहट आती है।'' वाना राहुल के यहां नौकरी कर घर की आर्थिक स्थिति सुधारती है।11

मनोवैज्ञानिक संदर्भ

पचपन खम्भे लाल दीवारें

1. अंतर्द्वंद्व— सुषमा यथार्थ को जानकर एकदम से उसके प्रति विद्रोह नहीं कर पाती, लेकिन उसका मन परिवार और नील इन दो ध्रुवों में विभिक्त हो गया है । वह छटपटा जाती है। 12

2. कुंठा तथा विद्रोह—परिवार की स्वार्थपरता और नील के प्रेम को न नकार सकने के कारण उसके मन की कुंठा फूट पडती है— ''जरा अपने दिल के अन्दर झांक कर देखो कि तुमने मेरे लिए क्या किया है। मेरा आराम से रहना ही तुम्हें खटकता है।.............मैं कुंवारी रह गई तो कौन—सा आसमान फट पडा?'' 13 लेकिन यह कुंठा विद्रोह में बदल नहीं पाती । अन्तिम क्षण तक सुषमा साहस जुटाती है, लेकिन अंततः पराजित होकर पचपन खम्भोंऔर लाल दीवारों में बन्द रहने की नियति स्वीकार कर लेती है ।

रूकोगी नहीं राधिका

1. असामान्य व्यक्तित्व—बचपन से पिता के सान्निध्य में अतिरिक्त लगाव के कारण राधिका के मन में एक ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। इस मनोग्रंथि को उस समय आघात पहुंचता है जब उसके पिता दूसरा विवाह कर लेते हैं। पिता की 'इमेज' को खण्डित होते देख वह विचलित हो जाती है । अपने पिता के प्रति उसकी भावनाएं एक मानसिक विकृति के रूप तक पहुंचने की होती है उसे कोई भी पुरूष पिता के सम्मुख नहीं जंचता। उसकी इस मानसिकता को डैन अनावृत करता है— ''राधिका, तुम मुझमें अपना पिता ढूंढ रही थी, वही पिता जिसे त्रास देने के लिए तुम मेरे साथ चली आई थीं, पर मैंने तुम्हारे पिता की जगह स्थापित नहीं होना चाहा, मैं तो स्वतंत्र व्यक्तित्व हूं। 14 राधिका के 'काम्पलेक्स' व 'एबनार्मल' व्यक्तित्व के संबंध में डैन कहता है ''मां के मरने के बाद तुम्हारा पिता के प्रति लगाव बहुत एबनार्मल हो गया। यदि भारतीय परिवेश में तुम्हें प्रारंभ से ही युवा मित्र बनाने की सुविधा होती तो ऐसा न होता। तब तुम्हें प्रसन्नता होती कि तुम्हारे पिता ने जीवन में फिर सुख

पाया है ।

2. अंतर्द्वंद्व– राधिका भारत से अमेरिका आती है और वहां से पुनः स्वदेश लौट जाती है । वह यह निर्णय ही नहीं कर पा रही कि वह कहां रहे। परिवेश से घुल–मिल न पाने के कारण उसे जडता का बोध घेर लेता है। विदेश जाने पर और पुनः स्वदेश लौटने पर उसे 'कल्चरल शाक' लगता है।

3. ग्लानि–बोध– विद्या की आत्महत्या और पिता की व्यथा से पीडित राधिका के मन में ग्लानि का भाव जाग्रत होता है, ''विद्या को कभी ठीक से जानने की चेष्टा नहीं की, हमेशा पूर्वाग्रह लेकर ग्रस्त रहें। ....वह भूचाल के बाद नींव तक हिल गए मकान की तरह अनुभव कर रही है। दरार खाई दीवारों की तरह ....।'' 16

अंतर्वंशी

1. अंतर्द्वंद्व– वाना का कथन है–''तुम नहीं समझोगे–वह मन–ही–मन कहती है मेरे जिन सपनों और आशाओं के साथ तुम मुझे ब्याह कर लाये थे, वह बिना पूरे हुए ही मिट कर विलीन हो गए और तुम्हारे दिमाग में आया तक नहीं कि वाना का अपना सोच और अपना सुख हो सकता है।''17

2. अतृप्ति बोध– वाना के जीवन में अतृप्ति–बोध को दो स्तरों पर देख सकते हैं–पहला तो भौतिक–वैभव साधनों की कमी से उपजी अतृप्ति और दूसरी दाम्पत्य में प्रेम के अभाव से उत्पन्न अतृप्ति। वह सोचती है–''मन में और भी इच्छाएं हैं। कितनी ढेर सारी इच्छाएं, जो दिन–पर–दिन बढती ही जाती हैं। अपना निजी घर, अपनी गाड़ी, जो आये दिन धोखा न दें। समाज में सम्मान .... इतना पैसा कि किसी चीज का दाम न पूछना पडे। यात्राएं, जैसे कि और लोग करते हैं, पैलेस आन व्हील्स, राजस्थान, कर्नाटक, केरल, होनोलुलू.........।'' 18 ठीक इसी प्रकार शिवेश व अपने संबंधों में बलात्कार की पीड़ा झेलती है।19

3. कुंठा और विद्रोह–वाना राहुल के प्रति आकृष्ट होते हुए भी शिवेश से बंधी पाकर द्वंद्वग्रस्त होती है, कुंठित हो जाती है। वह कुंठा सारिका की हत्या के उपरान्त फूट पडती है–''खाओ खाओ, खा लो मुझे बाप–बेटे मिलकर। नोंच लो मेरी हड्डियां, कितना बडा पेट है तुम लोगों का, भूख शांत ही नहीं होती ।''20

इन विविध संदर्भों में वाना की अतृप्ति कुंठा व अंतर्द्वंद्व उसे असामान्य चरित्र का रूप दे देती है। निष्कर्षतः लेखिका अस्तित्ववादी जीवन–दर्शन से पूर्ण प्रभावित है जिसके फलस्वरूप इनके पात्रों में ऊब, अकेलापन और संत्रास दिखाई देता है । पात्रों में परिस्थितियों से उबरने का साहस भी नहीं है, फिर भी नारी की दुविधा और छटपटाहट का ऐसा सफल चित्रांकन अत्यंत विरल है तथा वैयक्तिक जीवन की त्रासदी, सामाजिक दबाव, कुठा व अतृप्ति बोध में घिरी नारी के चरित्र को उनके उपन्यास विविध संदर्भों में जीवंतता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। फिर भी स्पष्ट है कि इन उपन्यासें में स्त्री के मनोवैज्ञानिक संदर्भों की अभिव्यक्ति को विशेष आग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 79 2. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 79 3. रूकोगी नहीं राधिका – पृष्ठ 9 4. रूकोगी नहीं राधिका – पृष्ठ 9 5. अंतर्वंशी – पृष्ठ 18–3 6. अंतर्वंशी – पृष्ठ 2 3 9 7. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 79 8. अंतर्वंशी – पृष्ठ 18–3 9. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 29 10. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 19 11. अंतर्वंशी – पृष्ठ 8–10 12. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 79 13. पचपन खम्भे लाल दीवारें– पृष्ठ 99 14. रूकोगी नहीं राधिका – पृष्ठ 8–29 15. रूकोगी नहीं राधिका – पृष्ठ 28 16. रूकोगी नहीं राधिका – पृष्ठ 116 17. अंतर्वंशी – पृष्ठ 99 18. अंतर्वंशी – पृष्ठ 18 19. अंतर्वंशी – पृष्ठ 18–55,61,99,102,134 20. अंतर्वंशी – पृष्ठ 89